Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

# संगीत में बहुविषयक अनुसंधान

**Dr. Anaya Thatte**

Dept. Of Music, University Of Mumbai

सार संक्षेपिका

संगीत द्वारा मनुष्य का सर्वांगिण विकास होना पूर्णतः संभव है। आधुनिक परिवेश में किसी भी विषय के अंतर्गत किए जाने वाले अनुसंधान की व्याप्ती केवल उसी विषय तक मर्यादित रखना केवल असंभव है। संगीत में किए जाने वाले संशोधनों के क्षेत्र की व्याप्ती बढाने हेतु नए क्षेत्र से संगीत को जोड़ना आवश्यक है। बहुविषयक अनुसंधान द्वारा इस उद्देश्य की प्राप्ती होना संभव है। शोधपत्र में इसी समस्या पर विचार विमर्श किया गया है।

बीज शब्दः अनुसंधान, बहुविषयक, ज्ञानशाखा, सैद्धांतिक पक्ष, क्रियात्मक पक्ष

## भूमिका

मनुष्य प्रारंभ से ही एक बुद्धिमान प्राणी रहा है। ज्ञान अर्जन करने की उसकी नैसर्गिक प्रवृत्ति है। इसी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण वह आसपास के वातावरण का अवलोकन कर उससे विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त करता है और अपना जीवन समृद्ध बनाने का प्रयास करता है। आदिमानव से आधुनिक सुसंस्कृत मानव तक की उसकी यह यात्रा इसी विकास का फल है। इससे उसकी प्रगति की दिशा में बढने की इच्छा स्पष्ट रूप से झलकती है।

भारतीय संगीत के विकासक्रम पर अगर ध्यान दिया जाए तो यह ज्ञात होता है कि वैदिक संगीत से लेकर आज के प्रचलित संगीत तक का विकास यह उसमें हुए अनुसंधान का ही परिणाम है। वैदिक काल के तीन स्वरों के सप्तक में से बारह स्वरों का विकास, उन स्वरों की आंदोलन संख्या, वीणा के तार पर निश्चित करके उनके स्थानों के निश्चित करना, मूर्च्छना की निर्मिती व उसके आधार पर आधुनिक रागों का विकास, विभिन्न कालखंड़ों में अस्तित्व में रही संकल्पनाऐं, प्रचलित अवरोही मूर्च्छना के अनुरूप आरोह स्वर सप्तक का विकास, नोटेशन पद्धति का विकास आदि सब विभिन्न कालों में संगीतज्ञों द्वारा किए गए अनुसंधान के ही परिणाम है।

संगीत एक जटिल मानसिक अनुभूती है, जो मनुष्य जीवन के सभी पहलुओं से जुड़ी है। इन सभी पहलुओं का अभ्यास केवल संगीत की ज्ञानशाखा में किया तो वह एकल दृष्टिकोण से किया हुआ अभ्यास होगा। परंतु आधुनिक काल तक केवल परंपरा तथा मनोरंजन के दृष्टिकोण से ही इसको परियोजित किया गया। संगीत को शैक्षिक क्षेत्र में महत्व प्राप्त होने के उपरांत अन्य विषयों के साथ संयोग से अनुसैंधानिक विषयों का विकास हुआ।

संगीत के दो महत्पपूर्ण पक्ष है, क्रियात्मक तथा सैद्धांतिक। मनोरंजन हेतु संगीत का विकास होने के कारण नित्य ही उसके क्रियात्मक पक्ष को अधिक महत्व दिया गया। परंतु क्रियात्मक पक्ष में हुए संशोधनों के कारण ही नए सिद्धांतों की निर्मिती होती है जिससे कला को स्थायित्व प्राप्त होता है। मध्यकाल में संगीत का सैद्धांतिक पक्ष दुर्लक्षित हुआ परंतु क्रियात्मक क्षेत्र में हुए परिवर्तनों के पश्चात ही आधुनिक कालीन शास्त्रीय संगीत का स्वरूप विकसित हुआ। आधुनिक युग में संगीत के क्षेत्र में शोध को पं. वि. ना. भातखंड़े जी ने बढ़ावा दिया। उन्होंने

अपने अमूल्य ग्रंथों की निर्मिती तथा संपादन के दौरान क्रियात्मक व सैद्धांतिक शास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन कर प्राचीन समय से संशोधन के क्षेत्र में प्रचलित परंपराओं का उचित विश्लेषण कर संकल्पनाओं को स्पष्टता प्रदान की। उनके कार्य द्वारा भारतीय संगीत में संशोधन की परंपरा अधिक विकसित हुई। नई पीढ़ी को शोधकार्य के प्रति लगाव निर्माण हुआ। संगीत शास्त्र के जतन संवर्धन का एक मार्ग विकसित हुआ। उन्नीसवीं सदी में परंपरागत गुरू शिष्य परंपरा के साथ ही संगीत शिक्षा के लिए संस्थागत सामूहिक शिक्षण पद्धति को भी स्वीकार किया जाने लगा। विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में संगीत विषय को स्नातक स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई और संगीत में भी अनुसंधान को बढ़ावा मिला। भारतीय संगीत में नवप्रयोग होने लगे और इस परंपरा को विकसित करने के लिए नए आयाम प्राप्त हुए।

संगीत के सैद्धांतिक तथा क्रियात्मक इन दोनों में से किस पक्ष में संशोधन किया जाए यह पूर्णतः शोधकर्ता पर निर्भर करता है। सामान्यतः संगीत क्षेत्र के शिक्षक रूढ़ीवादी होने के कारण शोधकार्यों के प्रति उदासीन रहते हैं। यही नहीं, बल्कि संगीत के क्रियात्मक क्षेत्र के जानकार व दक्ष लोगों में ऐसा मत भी प्रचलित है, कि संगीत के शास्त्र या सैद्धांतिक पक्ष पर अनुसंधान करना यानि समय का अपव्यय है। यदि संशोधक अपना समय संशोधन पर व्यतीत ना करते हुए उसी समय को रियाज में लगाऐं, तो उसका प्रस्तुतीकरण का अंग और अच्छे तरीके से विकसित होगा। यहां पर कलाकारों को ऐसी मानसिकता से बाहर लाना संशोधकों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

## संगीत में अंतःविषयक तथा बहुविषयक अनुसंधान की आवश्यकता

किसी भी क्षेत्र की प्रगति के लिए उसमें नए–नए विषयों का समावेश होना आवश्यक होता है। इस कारण भूत, भविष्य और वर्तमान को जोड़कर विषय की निरंतरता को बनाए रखने के लिए अनुसंधान की आवश्यकता होती है। किसी भी विषय पर संशोधन या शोधकार्य एक निरंतर प्रवाहित जलधारा के समान होता है। इसे ऐसे ही प्रवाहमान बनाए रखने के लिए इसमें प्रत्येक स्तर पर होने वाले बदलाव का शास्त्रशुद्ध पद्धति से दस्तावेजीकरण होना आवश्यक है। संगीत के द्वारा मनुष्य का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, भौतिक, कलात्मक व बौद्धिक विकास होता है। इसलिए संगीत में अनुसंधान की आवश्यकता है।

ड़ॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग के मतानुसार किसी भी शोध का मानक होना आवश्यक होता है। प्रत्यक्ष प्रमाण, शास्त्र प्रमाण, रेखीय प्रमाण व अनुमान प्रमाण के आधार पर शोध का मार्ग विकसित होता है और मानकीकृत भी बनता है। सिर्फ तथ्यों का संकलन अनुसंधान या शोध नहीं होता। इसमें संशोधक का सृजनशील प्रतिभा का दर्शन होना आवश्यक है। जिस शोधकार्य से भविष्य में होने वाले अनुसंधानों की झलक प्राप्त होती है, ऐसे संशोधन आदर्श समझे जाते है। समय, स्थान और आवश्यकताओं के अनुसार संगीत कला को इसके स्वरूप में होने वाले बदलावों को स्वीकार करना अनिवार्य है और यह कार्य सिर्फ अनुसंधान से पूरा हो सकता है।

भारतीय संगीत में विषय के अंतर्गत विविध समस्याओं पर अनेक शोध किए गए है। संगीत कला चौसठ कलाओं में से एक मानी जाती है। पहले से ही इन सभी कलाओं का आपसी तथा आंतरिक संबंध बताया गया है। पहले गुरूकुल पद्धति में भी शिष्यों को सभी कलाओं का प्रशिक्षण लेना अनिवार्य होता था। किसी भी विषय की ओर

देखने का दृष्टिकोण व्यापक बनाने के लिए यह प्रशिक्षण उपयोगी सिद्ध होता था। इन कलाओं में से विशेष रूप से सौंदर्य स्थलों को अलग कर उनका अपनी कला में उपयोग करने में ही सृजनात्मक अनुभूती प्राप्त होती थी।

## संगीत के साथ अन्य विषयों की अनुसैंधानिक संभावनाऐं

विषय के उचित आकलन के लिए अनुसंधान के एकल विषयक अनुसंधान/विषयांतर्गत तथा बहुविषयक अनुसंधान आदि विविध प्रकारों को समझना आवश्यक रहेगा। अनुसंधान के क्षेत्र में संशोधन कार्य शुरू करने के पूर्व की यह प्राथमिक तैयारी समझी जाती है। इनकी जानकारी के बिना आगे बढना संभव ही नहीं है। संशोधन का विषय अन्य कौन से विषयों के क्षेत्र से संबंधित है, उनको जानकर उनकी व्याप्ती तथा मर्यादा निश्चित करने के उपरांत उस संशोधन का समावेश किस प्रकार में होता है, यह निश्चित किया जाता है। जब यह संशोधन किसी एक ही विषय के अधिक गहराई में जाकर उसी में नवीन सिद्धांतों की खोज करता है, तब उसे विषयांतर्गत अनुसंधान कहते है। जब संशोधन का क्षेत्र एक से अधिक विषयों से संबंधित होता है, या संशोधन समस्या का समाधान प्राप्त करने के लिए अन्य ज्ञानशाखाओं का भी उपयोग अपरिहार्य होता है, तब उसे बहुविषयक संशोधन कहा जाता है। विशिष्ट परिकल्पना को जाँचने के लिए विविध शैक्षिक दृष्टिकोण, क्षेत्र या प्रणाली के मिश्रण से किए गए अभ्यास को बहुविषयक अनुसंधान कहते है। वस्तुनिष्ठ तथा सुव्यवस्थित पद्धति से अलग–अलग विद्याशाखाओं के माध्यम से उपलब्ध ज्ञान भंड़ार में नए सिद्धांतों की निर्मिती करना ही बहुविषयक अनुसंधान कहलाता है। विषय से संबंधित वर्तमान तथा वास्तविक समस्याओं के समाधान के लिए ऐसे अनुसंधान उपयुक्त होते है, जो कार्य अभिमुख, नीति संबंधी, अथवा उपयोजित प्रकार के होते है। साधारणतः विकसितशील देशों में विविध समस्याओं के समाधान के लिए इस प्रकार के संशोधन को बढावा दिया जाता है। विषय की बहुआयामी अवधारणाओं को समझकर विविध ज्ञानशाखाओं में उपलब्ध ज्ञान का उपयोग कर उन समस्याओं का समाधान ढूंढा जाता है। ऐसे अनुसंधान किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं किए जाते। इसमें विविध विषयतज्ञों का समूह कार्यरत होता है, और समूह के हर व्यक्ति का निश्चित उत्तरदायित्व होता है और वह उसी के अनुसार अपनी जिम्मेदारी निभाता है।

आधुनिक युग में ज्ञान की अनेक शाखाऐं विद्याध्ययन की शाखाओं के रूप में उदित हुई। इन सभी के नजरिए से संगीत में किए हुए शोध कार्यों को बहुविषयक अनुसंधान कहा जाता है। इस प्रकार संगीत के साथ ही इतिहास, समाजाशास्त्र, मनोवज्ञान, भूगोल, भौतिकशास्त्र, दर्शनशास्त्र, सांख्यिकी, विज्ञान इत्यादि अनेक ज्ञानशाखाओं का बहुविषयक अध्ययन होकर उस विषय के अनेक पहलू सामने आ सकते है। यह संशोधन तीन प्रकार से किया जाता है।

- पहले प्रकार में शोधकर्ता स्वतः सर्वेक्षण व अध्ययन द्वारा दूसरी ज्ञानशाखाओं से संबंधित जानकारी प्राप्त करता है और कभी–कभी आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए उस विषय के विशेषज्ञ से सलाह प्राप्त करता है। इसमें एक ही शोधकर्ता होता है।

- दूसरे प्रकार में दो अलग–अलग विषय के अभ्यासक चुने हुए विषय पर स्वतंत्र रूप से काम करते हैं। प्रस्तुत विषय पर अपने विषय के दृष्टिकोण से अध्ययन करने के लिए वे अपनी स्वतंत्र कार्यशैली बनाते हैं। शोधकार्य के समय विशिष्ट कालावधी के बाद साथ बैठकर विचार विमर्श करते हैं। इस ढंग से

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

अध्ययन करने के बाद आगे आए हुए निष्कर्षों की रिर्पोटे केंद्रिय कार्यालय में प्रस्तुत की जाती है। यहां सभी रिपोर्टों का अध्ययन करके उस पर सामूहिक रूप से निष्कर्ष निकाला जाता है।

- तीसरे प्रकार में भिन्न–भिन्न शाखओं के सभी शोधकर्ता एकत्रित रूप से मिलकर काम करते हैं। प्रत्येक को व्यक्तिगत स्तर पर अलग अलग जिम्मेदारी दी जाती है, जिनकी पूर्ती का जिम्मा भी उन्हीं का ही होता है। इस प्रकार के संशोधन में शुरू से लेकर अंत तक सभी लोग एक–साथ काम करते हैं। इस प्रकार के बहुविषयक शोध का निष्कर्ष एक तरफा नहीं होता। इसमें संशोधन के लिए प्रस्तुत की गयी उपकल्पना का ज्ञान की सभी शाखाओं के दृष्टिकोण से पूर्णतः अध्ययन किया जाता है। एक से अधिक व्यक्ति इस संशोधन में सहभागी होने के कारण प्राप्त निष्कर्ष का स्वरूप वैज्ञानिक होता है। केवल एक व्यक्ति के मत पर निष्कर्ष निर्भर नहीं रहता। आजकल तो विषयांतर्गत संशोधन की जगह ऐसे बहुविषयक संशोधनों को अधिक प्रोत्साहन दिया जाता है। जैसे संगीत के समाजशास्त्र में संगीत एवं समाजशास्त्र दोनों का अध्ययन होता है, वैसे ही संगीत के मनोविज्ञान में संगीत का मन से तथा मनोविज्ञान का संगीत से संबंध जोड़ना संभव होता है। इसी प्रकार अन्य ज्ञानशाखाओं का संगीत से संबंध जोड़ना संभव होता है और इसलिए शोधकर्ता को एक विषय के अलग–अलग पहलुओं का अध्ययन करते समय बहुविषयक संशोधन करना उपयुक्त सिद्ध होता है।

संगीत से संबंधित अनुसंधान का पारंपारिक तथा विस्तारित क्षेत्र संगीत शास्त्र है। इस क्षेत्र में संशोधन की प्रणालियां काफी विकसित नजर आती है। अन्य विषयों से संबंधित प्रणालियों में विज्ञान, तंत्रज्ञान, भौतिकशास्त्र, संगणकशास्त्र, शरीर रचना विज्ञान आदि का विकास बहुविषयक अनुसंधान में होता है। संगीत के अनुसंधान में सबसे बड़ी चुनौती क्रियात्मक क्षेत्र में आती है, जहां संशोधन का विषय कोई रचनात्मक कलाकृति होती है। क्रियात्मक आधारित संगीत में संगीत रचना, प्रस्तुति इस प्रकार संपूर्णतः संगीत विषय की गहराई में जाने वाले विषय है। इलेक्ट्रॉनिक संगीत की निर्मिती में अभियांत्रिकी, भौतिकशास्त्र, संगणकविज्ञान आदि का समावेश होता है।

संगीत में मन व मानसिक भावनाओं का बड़ा महत्व है। संगीत का सृजन, रसग्रहण, मनन यह सब मानसिक स्तर के अभ्यास की बातें है। पहले मनोविज्ञान का समावेश दर्शनशास्त्र के अंतर्गत होता था, परंतु आज मनोवैज्ञानिक अध्ययन को प्रायोगिक स्वरूप प्राप्त होने के कारण वह एक स्वतंत्र शाखा है। इसलिए संगीत एवं मनोविज्ञान का अध्ययन अंतर्विषयक या बहुविषयक अनुसंधान के अंतर्गत होता है। समाजशास्त्र के अंतर्गत आने वाले विभिन्न विषय इतने विस्तृत है, कि इस अनुसंधान के लिए चुना हुआ विषय सिर्फ एक शाखा तक मर्यादित ना रहकर दूसरी शाखाओं का अध्ययन भी संशोधन के वक्त करना पड़ता है। संगीत का समावेश भले ही समाजविज्ञान में ना हो, फिर भी संगीत में किए जाने वाले अनुसंधान के लिए इतिहास, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, विज्ञान, प्रौद्योगिकी इत्यादी का भी अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। संशोधन के लिए विषय चुनने के बाद यह निर्धारित किया जाता है कि संगीत के अलावा और किस शाखा के अंतर्गत प्रस्तुत विषय का बेहतर ढंग से अध्ययन किया जा सकता है, और फिर उसके अनुसार संशोधन की कार्यपद्धती निश्चित की जाती है।

शिक्षाशास्त्र में भी संगीत काफी विकसित हुआ है। शिक्षा शास्त्र से संबंधित संगीत के अनुसंधान में किसी भी ज्ञानशाखा को सहजता से संगीत के साथ जोड़ा जाना संभव है।

इतिहास और संगीत का अत्यंत महत्वपूर्ण संबंध है। श्रुति जैसे संगीत के ऐतिहासिक विषय पर आधुनिक युग में संशोधन करते समय इतिहास, संगीत, भौतिक विज्ञान आदि को जोड़ना आवश्यक हो जाता है।

इस प्रकार बहुविषयक संशोधन में शोधकर्ता को अन्य ज्ञान की शाखाओं का अध्ययन कर उनका महत्व जानने का अवसर प्राप्त होता है। मूल विषय से अन्य शाखाओं का संबंध जोड़ने से मूल विषय का क्षेत्र व्यापक होता है और विषय के संबंध में अनुसंधान की नयी संभावनाऐं निर्माण होती है।

आज के परिवेश में शिक्षा क्षेत्र से जुड़ने के लिए शैक्षिक कार्यों में बढती हुई बहुविषयक अनुसंधान के बारीकियों को जानना आवश्यक बन गया है। संगीत का क्षेत्र जिसमें अनुसंधान की परंपरा अन्य क्षेत्रों की तरह अधिक पुरानी नहीं है और केवल संगीत केंद्रित विषयों पर ही कुछ साल पहले तक संशोधन किया जाता था ऐसी स्थिति में बहुविषयक अनुसंधान के द्वारा संगीत में अनुसंधान की संभावनाऐं विकसित होना संभव है। वैश्विकरण तथा उदारीकरण के साथ हर ज्ञान क्षेत्र में चुनौतियाँ तथा समस्याएं बढ रही है जिसका समाधान केवल एकल अनुशासन केंद्रित अनुसंधान द्वारा प्राप्त होना संभव नहीं है। बहुविध ज्ञानशाखाओं द्वारा किए गए सम्मिलित अभ्यास से ही इन समस्याओं का हल प्राप्त हो सकता है। समस्या चाहे किसी एक विषय से ही संबंधित क्यों ना हो, परंतु उसका संबंध अन्य विधाओं से भी जुड़ा होता है। इसी कारण इन विधाओं के परिप्रेक्ष्य में उस समस्या का समग्र अभ्यास करने से संशोधन में परिपूर्णता आती है। समकालीन स्थिति में केवल विषयांतर्गत शोध द्वारा शोध की पुनरावृत्ती होने की संभावना अधिक रहेगी। संगीत जैसे क्षेत्र में ऐसे बहुविषयक अभ्यास अनुसंधान का दायरा बढ़ाते है। संगीत को केवल प्रस्तुति योग्य कला के दृष्टिकोण से देखने का पारंपारिक मत ऐसे अभ्यास द्वारा परिवर्तित होता है। संगीत का चिकित्सा, समाज, मानसशास्त्र, विज्ञान, तंत्रज्ञान, आदि शाखाओं में उपयोजन होना एक आम बात हो चुकी है। इन्हीं शाखाओं के साथ और अधिक विस्तार से संगीत का अभ्यास केवल संगीत ही नहीं, अपितु इन अन्य शाखाओं के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा।

## बहुविषयक अनुसंधान के पक्ष तथा विपक्ष

बहुविषयक अनुसंधान मूलभूत तथा उपयोजित संशोधन के बीच का सेतू है यह कहा गया तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसके माध्यम से मूलभूत संशोधन में निर्मित ज्ञान का उपयोग समस्या का समाधान प्राप्त करने में होगा और उपयोजित अनुसंधान के लिए नवीनतम ज्ञान की उपलब्धी होगी।

समस्या का समग्र रूप से विश्लेषण करना बहुविषयक अनुसंधान में संभव होने के कारण विषय के व्यापक अभ्यास हेतु बहुविषयक अनुसंधान उपयुक्त सिद्ध होता है।

इस प्रकार के अनुसंधान में समस्तरीय अभ्यास में वृद्धि निश्चित है, परंतु विषय की गहराई तक जाकर उसमें कुछ ठोस ज्ञान की वृद्धि करने की ओर दुर्लक्ष होने की संभावना दिखाई देती है।

इस अभ्यास में समस्या के विविध दृष्टिकोण तथा ज्ञानशाखाओं के अंतर्गत अभ्यास करने के उपरांत समाधान प्राप्त करने की सुविधा होती है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

ज्ञान, कौशल तथा तकनीक का आवश्यकतानुसार विभाजन इस प्रकार की संशोधन व्यवस्था में संभव है।

किसी उपलक्षित विषय में नए ज्ञान की निर्मिती के लिए बहुविषयक अनुसंधान अधिक उपयुक्त साबित हो सकता है।

इस प्रणाली द्वारा किए गए अनुसंधान अधिक समाजोन्मुख होते है। एक से अधिक ज्ञानशाखाओं में उसका विस्तार तथा प्रचार होकर ऐसे अनुसंधान समाज के सामने आते है।

अनुसंधान की प्रणाली में आवश्यक खर्चे में निधी का बँटवारा होने के कारण व्यक्तिगत वित्तीय लागत में राहत मिलती है। संशोधन के लिए किसी एक संशोधक को वित्तीय भार नहीं उठाना पड़ता।

बहुविषयक संशोधन में अलग–अलग विधाओं के साथ उपकल्पना पर अभ्यास होता है। इन्हीं विधाओं से संशोधन जुड़े होने के कारण संशोधन के लिए आवश्यक साधन और उपकरणों की उपलब्धी भी बहुविषयक अनुसंधान में आसानी से होती है, जो कि अन्य परिस्थिती में कई बार चुनौतीपूर्ण होता है।

## निष्कर्ष

आधुनिक युग विशेषज्ञता आधारित और ज्ञान संचालित युग है। इसी कारण जीवन के सभी आयामों को छूकर उसे आरामदायक तथा निर्विघ्न बनाने का प्रयास हर समय मनुष्य द्वारा किया जाता है। मनुष्य के जीवन में आने वाली समस्याऐं भी बहुआयामी स्वरूप की होने लगी है जिसका हल निकालने के लिए अलग–अलग विषय तथा ज्ञानशाखाओं का अभ्यास एक–साथ करना आवश्यक हो गया है। यही कारण है कि बहुविषयक अनुसंधान का महत्व निरंतर बढता जा रहा है। इस शोध के समय निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए धीरज, दृढता, तथा समर्पण की आवश्यकता होती है। इन गुणों के बिना यह अनुसंधान अधूरा ही रहेगा।

संगीत में बहुविषयक अनुसंधान करने के लिए ऐसे संशोधन आधुनिक सुविधाओं से सज्ज ऐसे अनुसंधान केंद्रों की आवश्यकता है, जहाँ संशोधक अनुशासनात्मक सीमाऐं सहजता से पार कर सकें। परंतु सभी उच्च शिक्षा के केंद्रों में यह सुविधाऐं उपलब्ध नहीं होती। संगीत जैसे विषय में तो संशोधन में भी पारंपारिकता का दृष्टिकोण आज भी रखा जाता है। बहुविषयांतर्गत संशोधन को इस क्षेत्र में बढ़ावा मिलना आवश्यक है। ऐसी पारिस्थितिक प्रणालियां जहाँ संशोधक को एक ही जगह उसके विषय से संबंधित सभी स्त्रोत सहजता से उपलब्ध हो सकें और सहयोगी रूप से वह अपना संशोधन पूर्ण क्षमता के साथ कर पाऐं ऐसे संशोधन केंद्रों की निर्मिती होना अत्यंत आवश्यक है। बहुविषयक संशोधन को बढ़ावा देने के लिए संशोधकों को आर्थिक सहायता के रूप में विशिष्ट निधी का प्रावधान होना चाहिए। इस प्रकार विविध अनुसंधान समूहों से जुड़ा हुआ संशोधन केंद्र अनुसंधान के लिए एक सकारात्मक वातावरण की निर्मिती कर सकता है।

## संदर्भ

अनया, ड़ॉ थत्ते (2018) संगीतातील संशोधन पद्धती, संस्कार प्रकाशन, मुंबई, द्वितीय आवृत्ती
शर्मा, डॉ. मनोरमा (2013) संगीत की अनुसंधान प्रक्रिया, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला
जरारे, डॉ. विजय (1995) शोध प्रणाली, ए.बी.ड़ी. पब्लिशर्स, जयपुर